विषय–पालि
कक्षा–11

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र 3 घण्टे का होगा।

1–गद्य सामञ्फलसुत्तं 30 अंक

2–पद्य–धम्मपदं (जरावग्गो, अत्तवग्गो, लोकवग्गो, बुद्धवग्गो, सुखवग्गो, पियवग्गो, कोधवग्गो, मलवग्गो। 30 अंक

3–व्याकरण, निबन्ध तथा अनुवाद

(1) व्याकरण––

(क) शब्द रूप––निम्नांकित संज्ञाओं तथा उनके अनुरूप अन्य शब्दों के रूप 10 अंक

[1] पुल्लिंग––बुद्ध

[2] स्त्रीलिंग––लता, रत्ति

[3] नपुंसकलिंग––फल

(ख) धातु रूप––वर्तमान, भूत तथा भविष्यत काल में निम्नलिखित धातुओं के रूप भू, हस, पठ, गम, वद, रक्ख, पच, नम, दिस, बुध, रूच, सक, लिख, भुज, चुर।

(ग) सन्धियाँ––निम्नलिखित सूत्रों पर आधारित होंगी, परन्तु सूत्रों को कंठस्थ करना आवश्यक नहीं है।

[क] स्वर सन्धि––(1) सरोलोपो सरो, (2) परोक्वचि, (3) न द्वे वा, (4) ए ओ नं

[ख] व्यंजन सन्धि––(1) व्यंजने दीघरस्सा।

[ग] निग्गहीतं सन्धि––(1) निग्गहीतं।

(घ) समास––निम्नलिखित समासों की सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण :

[1,] तत्पुरुष [2] कर्मधारय समास।

(2) निबन्ध––पालि भाषा में संक्षिप्त निबन्ध सरल सात वाक्यों में 10 अंक

इसिपतनं, सिद्वत्थ कुमारो, लुम्बिनी, अरियो अट्ठडिको, यातायात–सुरक्खा।

(3) अनुवाद––हिन्दी वाक्यों का पालि में रूपान्तर (अनुवाद का उद्देश्य छात्र/छात्राओं 10 अंक को पालि भाषा में वाक्य रचना एवं पालि भाषा का संगठन/पद्धति से परिचित कराना है)।

नोट :––अनुवाद के लिये कोई पाठ्य–पुस्तक निर्धारित नहीं है।

(4) पालि साहित्य का इतिहास प्रथम संगीति, सुत्तपिटक। 10अंक

निर्धारित पुस्तकें **(अ) गद्य––** सामञ्फलसुत्तं (दीघनिकायो) बौद्धभारती प्रकाशन, वाराणसी।

(आ) पद्य––

(1) धम्मपदं––अनुवाद–भिक्षु डा0 धर्म रक्षित, प्रकाशक ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।

व्याकरण एवं पालि साहित्य के इतिहास के लिये संस्तुत पुस्तकें––

(1) पालि व्याकरण––लेखक–भिक्षु धर्म रक्षित, प्रकाशक––ज्ञान मण्डल लिमिटेड, कबीर चौरा, वाराणसी।

(2) पालि महाव्याकरण––लेखक–भिक्षु जगदीश कश्यप––प्रकाशक––महाबोधि सोसाइटी सारनाथ, वाराणसी।

(3) पालि साहित्य का इतिहास––लेखक–भिक्षु धर्मरक्षित, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी।